

MA sem-4

CC-13

धर्म दर्शन का स्वरूप और क्षेत्र (Nature and Scope of Philosophy of Religion)

प्रस्तावना

धर्म मानव जीवन का अत्यंत प्राचीन और महत्वपूर्ण आयाम है। मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही मनुष्य ने ईश्वर, आत्मा, जगत और जीवन के उद्देश्य के बारे में प्रश्न उठाए हैं। इन प्रश्नों के तर्कसंगत, दार्शनिक और आलोचनात्मक अध्ययन को धर्म दर्शन (Philosophy of Religion) कहा जाता है। यह न तो केवल धार्मिक आस्था है और न ही केवल धर्मशास्त्र, बल्कि यह धर्म से संबंधित मान्यताओं, सिद्धांतों और अनुभवों का विवेकपूर्ण विश्लेषण है।

यदि धर्म ईश्वर में विश्वास, पूजा-पद्धति और नैतिक आचरण का मार्ग दिखाता है, तो धर्म दर्शन उन विश्वासों और सिद्धांतों की तार्किक परीक्षा करता है। उदाहरण के लिए, भगवद्गीता, कुरान और बाइबिल धार्मिक ग्रंथ हैं, परंतु धर्म दर्शन इन ग्रंथों में प्रतिपादित विचारों की तर्क और विवेक की कसौटी पर जांच करता है।

धर्म दर्शन का स्वरूप (Nature of Philosophy of Religion)

धर्म दर्शन के स्वरूप को निम्न बिंदुओं में समझा जा सकता है—

1. तार्किक और आलोचनात्मक स्वरूप

धर्म दर्शन का प्रमुख स्वरूप तार्किक (logical) और आलोचनात्मक (critical) है। यह किसी भी धार्मिक सिद्धांत को बिना सोचे-समझे स्वीकार नहीं करता। यह प्रश्न करता है—

- * क्या ईश्वर का अस्तित्व तर्क से सिद्ध किया जा सकता है?
- * क्या आत्मा अमर है?
- * क्या चमत्कार संभव हैं?

उदाहरण के लिए, संत थॉमस एक्विनास ने ईश्वर के अस्तित्व के पाँच तर्क प्रस्तुत किए, जिन्हें “फाइव वेज़” कहा जाता है। धर्म दर्शन इन तर्कों का विश्लेषण करता है कि वे कितने युक्तिसंगत हैं।

2. तटस्थता (Neutrality)

धर्म दर्शन किसी एक धर्म का पक्ष नहीं लेता। यह हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध आदि सभी धर्मों के सिद्धांतों का निष्पक्ष अध्ययन करता है। उदाहरण के लिए, गौतम बुद्ध ने ईश्वर की अवधारणा को आवश्यक नहीं माना, जबकि आदि शंकराचार्य ने ब्रह्म को परम सत्य माना। धर्म दर्शन इन दोनों दृष्टिकोणों की तुलना करता है।

3. अनुभव और आस्था का विश्लेषण

धर्म केवल तर्क पर आधारित नहीं होता, उसमें आस्था (faith) और धार्मिक अनुभव (religious experience) भी शामिल होते हैं। धर्म दर्शन यह जानने का प्रयास करता है कि धार्मिक अनुभव क्या है? क्या यह केवल मनोवैज्ञानिक अवस्था है या वास्तव में किसी दिव्य सत्ता का अनुभव?

उदाहरण के लिए, विलियम जेम्स ने अपनी पुस्तक *The Varieties of Religious Experience* में धार्मिक अनुभवों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया।

4. सार्वभौमिक दृष्टिकोण

धर्म दर्शन का दृष्टिकोण संकीर्ण नहीं होता। यह मानवता के व्यापक हित और सार्वभौमिक मूल्यों को ध्यान में रखता है। यह सत्य, अहिंसा, प्रेम और करुणा जैसे नैतिक मूल्यों की दार्शनिक व्याख्या करता है।

धर्म दर्शन का क्षेत्र (Scope of Philosophy of Religion)

धर्म दर्शन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इसमें निम्नलिखित विषयों का अध्ययन किया जाता है—

1. ईश्वर का अस्तित्व

धर्म दर्शन का प्रमुख विषय ईश्वर का अस्तित्व है। ईश्वर के अस्तित्व के पक्ष और विपक्ष में अनेक तर्क दिए गए हैं—

* कारण-कार्य तर्क (Cosmological Argument)

* उद्देश्य तर्क (Teleological Argument)

* नैतिक तर्क (Moral Argument)

इमैनुएल कांट ने नैतिक तर्क के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व की आवश्यकता को स्वीकार किया, जबकि डेविड ह्यूम ने इन तर्कों की आलोचना की।

2. आत्मा और अमरत्व

क्या आत्मा अमर है? क्या मृत्यु के बाद जीवन है?

हिंदू दर्शन में आत्मा के पुनर्जन्म की धारणा मिलती है, जबकि इस्लाम और ईसाई धर्म में स्वर्ग और नरक की अवधारणा है। धर्म दर्शन इन मान्यताओं का तार्किक परीक्षण करता है।

3. बुराई की समस्या (Problem of Evil)

यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान और दयालु है, तो संसार में दुःख और बुराई क्यों है? यह प्रश्न धर्म दर्शन की प्रमुख समस्या है। ऑगस्टीन ऑफ हिप्पो ने कहा कि बुराई मानव की स्वतंत्र इच्छा का परिणाम है।

4. धर्म और नैतिकता

क्या नैतिकता का आधार धर्म है? या नैतिकता धर्म से स्वतंत्र है?

कुछ दार्शनिक मानते हैं कि नैतिक नियम ईश्वर द्वारा दिए गए हैं, जबकि अन्य के अनुसार नैतिकता मानव बुद्धि और समाज से उत्पन्न होती है।

5. धार्मिक भाषा

धार्मिक कथन जैसे "ईश्वर सर्वज्ञ है" — क्या यह कथन शाब्दिक रूप से सत्य है या प्रतीकात्मक? धर्म दर्शन धार्मिक भाषा की प्रकृति का विश्लेषण करता है।

6. चमत्कार और रहस्यवाद

क्या चमत्कार संभव हैं? क्या संतों और महापुरुषों के अनुभव वास्तविक हैं?

धर्म दर्शन इन प्रश्नों का वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टि से अध्ययन करता है।

धर्म दर्शन और धर्मशास्त्र में अंतर

धर्मशास्त्र (Theology) किसी विशेष धर्म के सिद्धांतों को सत्य मानकर उनकी व्याख्या करता है, जबकि धर्म दर्शन उन सिद्धांतों की आलोचनात्मक समीक्षा करता है। उदाहरण के लिए, धर्मशास्त्र मार्टिन लूथर

के सिद्धांतों को ईसाई धर्म के संदर्भ में स्वीकार करता है, जबकि धर्म दर्शन उन सिद्धांतों का तर्कपूर्ण मूल्यांकन करता है।

आधुनिक संदर्भ में धर्म दर्शन का महत्व

आज का युग विज्ञान और तर्क का युग है। विज्ञान ने अनेक धार्मिक धारणाओं को चुनौती दी है। ऐसे में धर्म दर्शन का कार्य है कि वह धर्म और विज्ञान के बीच संवाद स्थापित करे।

उदाहरण के लिए, ब्रह्मांड की उत्पत्ति के संबंध में वैज्ञानिक सिद्धांत और धार्मिक मान्यताएँ कभी-कभी अलग प्रतीत होती हैं। धर्म दर्शन इन दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है।

निष्कर्ष

धर्म दर्शन धर्म से संबंधित मान्यताओं, सिद्धांतों और अनुभवों का तार्किक, आलोचनात्मक और निष्पक्ष अध्ययन है। इसका स्वरूप विवेकपूर्ण और तटस्थ है, तथा इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक है।

यह न केवल ईश्वर, आत्मा और अमरत्व जैसे आध्यात्मिक विषयों पर विचार करता है, बल्कि नैतिकता, बुराई की समस्या, धार्मिक भाषा और चमत्कार जैसे जटिल प्रश्नों का भी समाधान खोजता है।

इस प्रकार, धर्म दर्शन मानव जीवन को गहराई से समझने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह आस्था और तर्क के बीच संतुलन स्थापित कर मानव को सत्य की खोज के मार्ग पर अग्रसर करता है।